प्रतिध्वनि कला
संस्कृति की

ISSN 2349-137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

अनहद लोक

वर्ष– 8, विशेषांक– 2, 2022
शोधार्थी अंक

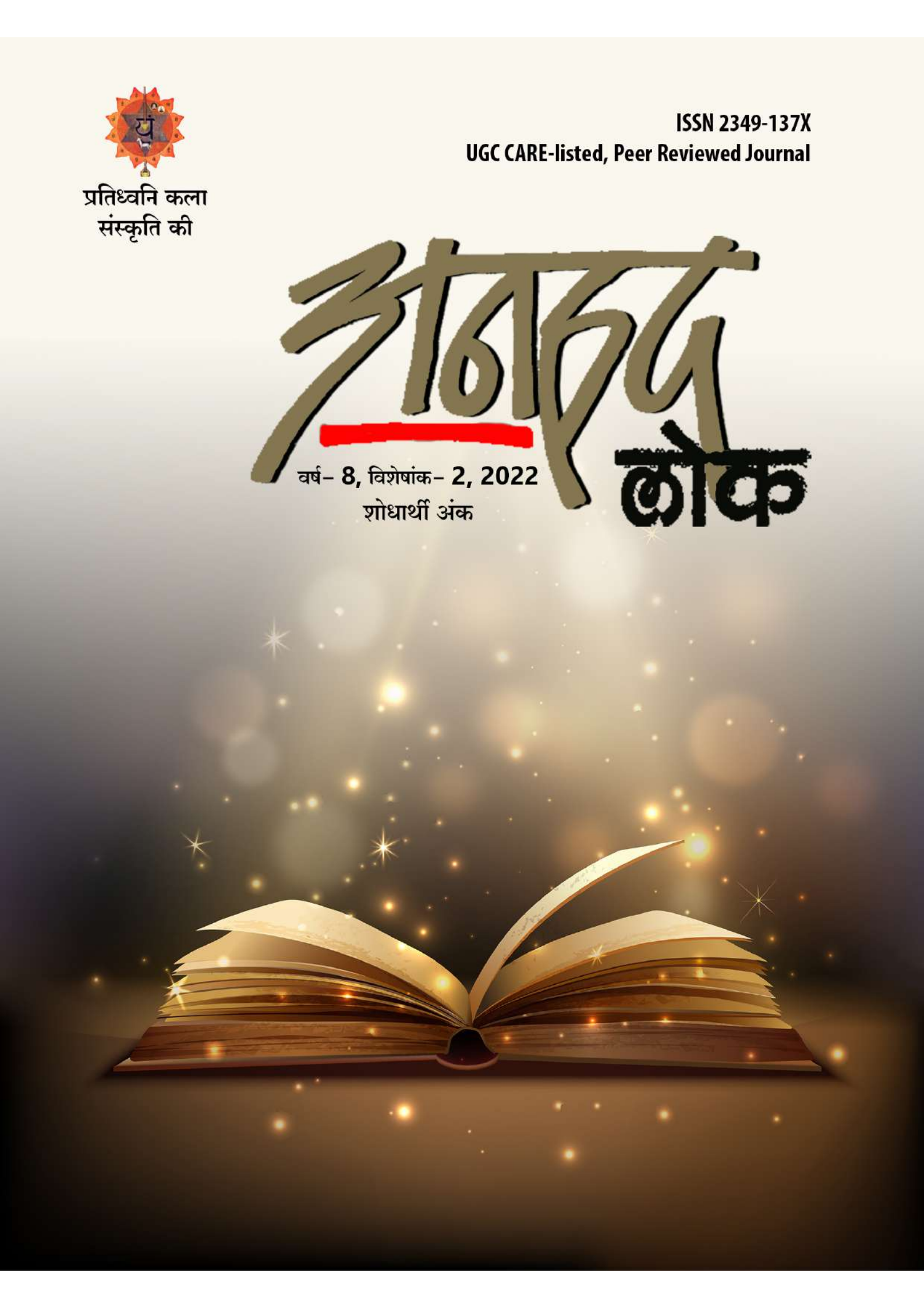

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

वर्ष-8, 2022, विशेषांक-2
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक
डॉ. मधु रानी शुक्ला

सम्पादक मण्डल
डॉ. राजश्री रामकृष्ण, डॉ. मनीष कुमार मिश्रा,
डॉ. धनंजय चोपड़ा, डॉ. ज्योति सिन्हा

सहायक सम्पादक
सुश्री शाम्भवी शुक्ला

व्यंजना

आर्ट एण्ड कल्चर सोसायटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतमनगर, सुलेमसराय
प्रयागराज - 211011

14. Impact of Music Therapy on Stress Reduction 76
-Anubhuti Gupta
15. उत्तराखण्ड के पर्वतीय जौनसार बावर क्षेत्र की संस्कृति में हारूल लोकगीत 81
-शारदा सहगल
प्रो. शर्मिला टेलर
16. A Study on the Significance of Borgeet Ragas of 86
Assam in 15th – 16th Century A.D. -Arkaja Bharadwaj
Prof. Anupam Mahajan
17. दरभंगा (अमता) घराने के यशस्वी गायक पंडित राम चतुर मल्लिक की गायन-शैली 95
-प्रेरणा कुमारी
प्रो. लावण्य कीर्ति सिंह ''काव्या''
17. उपशास्त्रीय गेय विधाओं में काव्य की उपादेयता -शिल्पी झा 100
18. बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सोलह संस्कारों में लोकगीत -अपर्णा पाण्डेय 104
डॉ. सुनीता द्विवेदी
19. An Analytical Study on the Composition –
"Sangeetha Jnanamu Bhakti Vina" -Praseeda Bal 110
Dr. V Janaka Maya Devi
20. मैथिली लोक संस्कृति में लोकगीतों की जीवटता -नेहा झा 114
डॉ. प्रीति सिंह
21. ऋतुकालीन रागों में ख्याल की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 119
(बसंत एवं वर्षा ऋतु के विशेष संदर्भ में) -दिव्या श्रीवास्तव
प्रो. विद्याधर प्रसाद मिश्रा
22. गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का दर्पण : नई शिक्षा नीति 2020 -बीना नेगी चौधरी 125
23. Understanding Rakthi Ragas: Importance of Sruti Analysis 128
-Deepashree S M
Dr. Hamsini Nagendra
24. तिलका माँझी विश्वविद्यालय 'संगीत' विभाग (भागलपुर) 133
संगीत की उत्पत्ति एवं मानव जीवन पर इसका प्रभाव -सोनिका कुमारी
डॉ. सुनील कुमार तिवारी
डॉ. श्वेता पाठक
25. Improvisatory Elements and Ornamentations -Bhavik Mankad 138
Prof. Ojesh Pratap Singh
26. आचार्य बृहस्पति द्वारा रचित बंदिशों में 144
साहित्यिक व सांगीतिक पक्ष : एक अध्ययन -रवि पाल
27. आध्यात्म और संगीत -कौस्तुभ पारे 148
डॉ. संतोष कुमार पाठक
28. भारतीय संस्कृति का दर्पण भारतीय संगीत -अमृतपाल सिंह 152
डॉ. सिम्मी. आर. सिंह

मैथिली लोक संस्कृति में लोकगीतों की जीवटता

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक आचार्य हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

नेहा झा
शोधार्थी (हिंदी विभाग)
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सार-संक्षेप

लोक साहित्य समाज की भाषा का हिस्सा है, भाषा का सबंध साहित्य से होता है और साहित्य का समाज और जीवन से सीधा सबंध होता है इसलिए लोकसाहित्य को समाज का आधार माना जाता है। भारतीय लोकसाहित्य इसलिए हमारे समाज और संस्कृति का आधार है।

आज आधुनिक समय में नई पीढ़ी के लिए 'लोक' शब्द मात्र एक पिछड़े पन का अर्थ है। लोक संस्कृति या लोक साहित्य को यह अनपढ़ लोगों की चीज समझने लगे है। ऊँची इमारते तथा मेट्रो सिटी का समाज खुद को इन लोक संस्कृतियों तथा लोक साहित्य से अलग मानता है परंतु मिथिलांचल समाज एक ऐसा समाज है जिसने अपनी संस्कृति तथा लोक साहित्य को अपनी धरोहर की तरह माना है। अपवाद वहां भी देखने को मिल जायेंगे लेकिन उत्तर भारत में अगर किसी संस्कृति ने खुद की अपनी अलग पहचान स्थापित की है तो उसमें मैथिली संस्कृति का नाम सबसे पहले उल्लेख किया जायेगा। लोकसाहित्य किसी भी समाज और संस्कृति की धरोहर होता है। लोक साहित्य लोक की बात कहता है। मैथिलि लोकगीतों ने मैथिलि लोक संस्कृति के उत्थान तथा विकास में एक अहम भूमिका निभाई है। मिथिलांचल के हर पर्व तथा व्रत में लोकगीतों की विशिष्ट जगह है। मिथिला संस्कृति तथा लोकगीतों में यहाँ की महिलाओं की अहम भूमिका है।

बीज शब्द

लोक संस्कृति, लोकसाहित्य, लोकगीत, मिथिलांचल समाज, लोकजन

मैथिलि भारतीय भाषाई परिवारों में मागधी परिवार की भाषा के अंतर्गत आती है। भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही मैथिलि भाषा लोक साहित्य में अपना अहम योगदान देती आ रही है और संस्कृत साहित्य में भी मैथिलि की मौजूदगी देखी जा सकती है। बिहार की तमाम बोलियों एवं भाषाओं में सिर्फ 'मैथिलि' ही एक ऐसी भाषा है जिसमे 'विपुल साहित्य' मौजूद है। वैदिक काल से ही मिथिला में अनेक ऋषियों की उत्पति हुई। जिनमे वामदेव, गोतम रहूगणा, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, कपिल आदि का नाम बड़े सम्मान के साथ मैथिलि के संदर्भ में लिया जाता है। सामवेद और यजुर्वेद के कुछ मंत्रों का रचियता भी गोतम रहूगणा और याज्ञवल्क्य को माना जाता है। मैथिलि भाषा के कुछ और प्राचीन रूप अशोक के शिलालेखों में उपलब्ध मिलते है। साहित्य में मैथिलि का प्राचीन रूप 'बोद्ध गान ओ दोहा' में मिलता है। 'बोद्ध गान ओ दोहा' विभिन्न भाषाओं से मिलकर बना है जिसके अंतगर्त मगही, मैथिलि, बंगला और